क्षेत्र में अनुसंधान के लिए और उच्च स्तर के प्रशिक्षण के लिए होता है। लखनऊ में भी इस तरह की एक संस्था कायम की गई है जिसका नाम है संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज। उत्तर प्रदेश में चिकित्सा सुविधाओं की कितनी कमी है, कितनी कठिनाई है यह सब आप जानते हैं। इस विशेष इंस्टीट्यूट के संबंध में उत्तर प्रदेश के अखबारों में और जनता में इस बात की चर्चा होती रही है वहां पर कितनी दुर्व्यवस्था है। पिछले ही दिनों देश के सभी अखबारों में यह आया था कि जो वहां बाहर से सामान आया है उसमें घोटाला हुआ है और उसका प्रयोग भी नहीं किया गया। इसके परिणामस्वरूप वहां के डाइरेक्टर को निलंबित भी किया गया है। आप जानते हैं कि हमारे देश में एक मेडिकल कौंसिल है जो कि सब पर नियंत्रण रखती है कि शिक्षा का स्तर क्या हो और चिकित्सा की कार्य-पद्धति क्या हो, इनका स्तर क्या होना चाहिए। इसके ऊपर यह संस्था नियंत्रण रखती है। उसने एक रिपोर्ट इस संबंध में दी है। इसके प्रारम्भिक जो एक-दो शब्द हैं, वह मैं आपके सामने पढ़ना चाहता हैं। इससे स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।

..."deadly place and a nest of corruption."

What was Lucknow's centre of excellence is now a deadly place and a nest of corruption.

इसके बाद इसमें अगला संदेश है कि:

"Patient's life may not always be safe here."

यह मैडिकल कौंसिल की रिपोर्ट है और यह संतोष की बात है कि दो-तीन रोज पहले स्टेट्स-मैन में यह रिपोर्ट आई है। और भी बहुत कुछ इसमें कहा गया है। वहां पर एक पब्लिक रिलेशंस आफिसर होता है और वह बाहर के लोगों की अफरा-तफरी में जो जन्केट्स होता है और इंटरनेशनल सेलेब्रटीज को जो बुलाया जाता है उसमें एल्यूजन हो रहा है, उसके द्वारा धोखा पैदा किया जा रहा है कि यह संस्था बहुत अच्छी तरह से काम कर रही है। महोदय, वहां पर काफी अरसे से कोई फुल टाइम डाइरेक्टर नहीं है। जो वहां पर काम कर रहे हैं, मैं नाम नहीं लेना चाहता, उनके संबंध में इस रिपोर्ट में बहुत सी बातें कही गई हैं। यही नहीं जो कार्डियोवस्कलर सर्जरी है, जो शल्य चिकित्सा है हृदय की, उसके जो डाक्टर साहब हैं उन्होंने अपना प्राइवेट फाउंडेशन कायम किया हुआ है और रिपोर्ट में इसके संबंध में लिखा हुआ है। थेरोटिक सर्जरी और कार्डियावस्कलर सर्जरी का अगर वहां पर आकलन किया जाए तो वहां पर सबसे ज्यादा बुरी अवस्था इन दोनों विभागों की है। उसमें यह भी लिखा है कि वहां न दवाइयां हैं और न वहां पर किसी तरह से कोई आपरेशन थियेटर है और न इंसेंटिव केयर यूनिट में किसी तरह का कोई प्रबंध है। रिपोर्ट में एक जगह यह भी लिखा हुआ है कि:

"misidentification of CT scan on two neurosurgery patients led to the death of one patient and craniotomy and coma to another."

इस तरह की स्थिति है। वहां का जो मॉर्टलिटी रेट है, आपरेशन का, वह 25 से 45 प्रतिशत है। इसी तरह से ग्राफिक्स इत्यादि को भी अगर लें - लेकिन मैं सदन का समय इस विषय में अधिक नहीं लेना चाहता। लेकिन यह बात कहना चाहता हूं कि जब किसी राज्य में राष्ट्रपति शासन होता है तो जो दुर्व्यवस्था होती है या इस प्रकार की जो कमियां होती हैं, आशा की जाती है कि उनको दूर किया जाएगा। पर इसकी तरफ अभी तक ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वरना, जैसा कि रिपोर्ट में कहा गया है कि पब्लिक रिलेशंस एक्सरसाइज होते जा रहे हैं। राज्यपाल महोदय ने, एक डाक्टर ने जो अपना प्राइवेट हार्ट फाउंडेशन कायम किया है, डिवाइन हार्ट फाउन्डेशन, भगवान के पास जल्दी भेजने का जो फाउन्डेशन है, उसका उद्घाटन हमारे राज्यपाल महोदय ने किया है। मैं आपके माध्यम से जो स्वास्थ्य मंत्री हैं, जो उत्तर प्रदेश के ही हैं, उनका ध्यान दिलाना चाहता हूं इस दुखद प्रकरण के संबंध में और आपके माध्यम से फिर विनम्र निवेदन करना चाहता हूं कि यह जनता के दुख का प्रश्न है और उसके निराकरण के लिए इस संस्था की व्यवस्था शीघ्र ही सूचारू रूप से पूर्ण की जाए। धन्यवाद।

RE: NEED TO CHANGE THE STARTING POINT OF SAWANTWADI BOUND TRAIN FROM KURIA TO DADAR

श्री संजय निरूपम (महाराष्ट्र): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान महाराष्ट्र विशेषकर कोंकण क्षेत्र के एक प्रश्न की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। कोंकण महाराष्ट्र का एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है और प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण क्षेत्र है। दुर्भाग्य की बात यह है कि वहां रेलें शुरू करने में 50 साल लग गये। अभी वहां पर ट्रेन शुरू हुई है। कोंकण रेलवे स्थापित हुआ है। मैं इसके लिए भारतीय रेलवे का धन्यवाद देना चाहता हूं कि आखिरकार हमारे संघर्ष का नतीजा निकला और उन्होंने रिस्पोंस दिया। कोंकण रेलवे में बहुत सारी ट्रेनें अभी शुरू नहीं हुई हैं। कुछ ट्रेनें शुरू होने वाली हैं। एक ट्रेन उनमें से है सामंतवाड़ी के लिए। सामंतवाड़ी

स्टेशन जाने के लिए मुम्बई के कुर्ला स्टेशन से यह ट्रेन शुरू होने जा रही है जबकि हम यह चाह रहे हैं कि प्रोपर दादर से यह ट्रेन शुरू हो क्योंकि कुर्ला के बजाय दादर से जाना आसान है। जब हम कोंकण रेलवे की कुछ अथारिटीज़ के पास अपना डेलीगेशन ले कर गये तो उनका कहना यह है कि दादर में प्लेट फार्म नहीं है। मेरा सुझाव यह है कि दादर से जितनी ट्रेनें आज की तारीख में चल रही हैं, उनमें से एक वक्त निकाला जाए जब रात हो या सुबह हो या जिस वक्त वहां से बहुत कम ट्रेनें शुरू होने वाली हों। बिहार और यू॰पी॰ की बहुत सारी ट्रेनें दादर से शुरू होती हैं, उन ट्रेनों को बांद्रा या कुर्ला से शुरू किया जा सकता है क्योंकि पहले से बिहार और यू॰पी॰ के लिए ट्रेनें बांद्रा और कुर्ला से जाती है। मैं कोंकणवासियों की तरफ से आपके माध्यम से रेल मंत्रालय के समक्ष निवेदन करना चाहता हूं कि सामंतवाड़ी की ट्रेन को कुर्ला के बजाय दादर से शुरू किया जाए। धन्यवाद।

PROF. RAM KAPSE (Mahatrashtra): Sir, I associate myself with his demand. That is the only point I want to make.

RE: BHOOMI POOJA FOR LIFT FOUNDATION STONE LAYING CEREMONY

SHRI ASHOK MITRA (West Bengal): Mr. Vice-Chairman, Sir, I wish to raise an issue which touches upon the very fundamentals of our secular republic. The Indian Institute of Foreign Trade is a 100-per cent subsidiary of the Ministry of Commerce. It trains researchers on aspects of foreign trade. But it is a Government of India undertaking.

On 5th December, i.e. last Thursday, there was a foundation stone laying ceremony for a new building of this Institute. The Prime Minister was the Chief guest. Now what I have to say may not be in agreement with the point of view of some of my hon. colleagues. But I would like them to listen to me. We call ourselves as a secular republic. Now the Prime Minister was present. There was a Bhoomi Pooja and the Prime Minister participated as the principal functionary at the Bhoomi Pooja. This newspaper carries that picutre. I hope somebody from the heaven is examining the implications of what has happened. We are supposed to be a secular republic. And secularism means that the State should be equidistant from all religions. Not only that, the State should also desist itself ...(*interruptions*)...

श्री राघवजी (मध्य प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, भूमि पूजा का संबंध किसी धर्म से नहीं है (व्यवधान) यह भारतीय संस्कृति का एक अंग है (व्यवधान)

श्री नीलोत्पल बसु (पश्चिमी बंगाल) पहले सुन लीजिये, अजीब बात है। (व्यवधान) बाद में बोलिये (व्यवधान)

SHRI ASHOK MITRA: Raghavji, would you kindly allow me to speak? I never interfered when you were speaking ...(*interruptions*)...

Not only that, the State should also stay away from religious rituals of all descriptions. If you do not do that, we will be playing into the game of our hostile neighbours who are determined to prove that we are not a secular republic as we claim to be. This picutre is here. Suppose it is printed in thousands and distributed all over Pakistan. Then, what would be its implications? In this connection, I have two specific suggestions for the consideration of the Government and I do it with all humility.

Firstly, from now on somebody has to show some courage somehwere. From now on the Government should take a decision that there should be no religious ritual of a particular denomination for this kind of official functions. Secondly, the Government of India should also issue a directive under Article 256 asking the State Governments to desist from this kind of arrangements.

श्री राघवजी: इस पर हमें सख्त आपत्ति है। यह भारत की संस्कृति की मांग है यह कोई धार्मिक अनुष्ठान नहीं है। यह हिंदुस्तान में 5-10 हजार वर्षों से प्रथा चली आ रही है और यह भारत का अंग बन चुकी है। सिर्फ पाकिस्तान विरोध करता है पड़ोसी देश हो कर इसलिए हम यह भूमि पूजन न करें ...(व्यवधान)...

श्री नीलोत्पल बसु: सरकार को यह करने की जरूरत नहीं है ...(व्यवधान)

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता (मध्य प्रदेश): भूमि पूजन जो है इसमें कोई जाति का धर्म का सवाल नही है ...(व्यवधान)